गोलालारीय समाज का मुखपत्र

RNI No. MPHIN/2008/26873
No. MP/ICD/1252/2015-2017 सेवा में,

golalariya_darshan@yahoo.in
गोलालारीय दर्शन यहां भी देख सकते है –
www.golalariya.com

लेट पोस्टिंग

मासिक
गोलालारीय दर्शन

अपनों के साथ अपनी बातें

जो भरा नहीं हैं भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं। हृदय नहीं पत्थर हैं वो, जिसे समाज से प्यार नहीं।

वर्ष : 6 अंक : 10 पृष्ठ संख्या : 10 माह – 15 मई 2015 सहयोग राशी – आजीवन सदस्य बनें ।

गौरक्षा और हम

आजकल ''गौरक्षा'', ''गौवध निषेध'' आदि विषयों पर जमकर चर्चा हो रही है । पत्र-पत्रिकाओं, सभा गोष्ठियों आदि में यह विषय ज्वलंत हो रहा है । इस वर्ष महावीर जयंती के कार्यक्रम में भी गौरक्षा विषय ही छाया रहा है । जिसे देखो वह स्वयं को गौवंश का सबसे बड़ा हिमायती साबित करने में लगा है । सोचने की बात है कि अचानक हम सब गाय के इतने बड़े संरक्षक, इतने बड़े पक्षकार क्यों हो गये है जबकि न तो गाय हमारे लिये कोई नई चीज है, और न ही अचानक उसका महत्व हमारे जीवन में बढ़ गया है। बचपन से ही जब हिन्दी भाषा का विधिवत अध्ययन हमें कराया जाता था तो ''गाय का निबंध'' ही सर्वप्रथम हमें निबंध विद्या से परिचय कराता था । गाय का महत्व इसी बात से दृष्टिगोचर होता है कि महात्मा गाँधी कहते थे ''गाय जन्म देने वाली माँ से कहीं बढ़कर है। माँ तो साल दो साल दूध पिलाकर हमसे जीवन भर की आशा रखती है, किन्तु गौमाता स्वयं केवल जीवन पर्यंत हमारी अटूट सेवा ही नहीं करती बल्कि उसके मरने के बाद भी हम उसके चर्म, माँस, हड्डी, सींग इत्यादि से अनेक लाभ उठाते है।''

परन्तु आज बड़े अफसोस का विषय है कि गौवंश का संरक्षण करने के बजाय हम गौमाँस का निर्यात करने में विश्व में अग्रणी हो रहे है। आँकड़ो के अनुसार आज भारत विश्व का सबसे बड़ा गौमाँस निर्यातक देश बन गया है और वह भी तब जबकि देश में हिन्दुत्ववादी सरकार शासन में है ।

यही वजह है कि आज जैन साधु संतों को गौवध निषेध कानून बनाने के लिये आंदोलन करना पड़ रहा है। आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज ने जहां 1 करोड़ हस्ताक्षर अभियान के द्वारा इसका समर्थन किया वहीं श्वेताम्बर आचार्य सम्राट डॉ. शिवमुनि ने भारत सरकार से प्रत्यक्ष अनुरोध किया कि शीघ्रातिशीघ्र गौवध पर प्रतिबंध लगाने हेतु कठोर कानून बनाये । दुर्भाग्य का विषय है कि राम, कृष्ण,महावीर स्वामी एवं महात्मा गाँधी के देश में गौहत्या हो रही है और गौमाँस का निर्यात किया जा रहा है। गौमाँस के उत्पादन, विक्रय और निर्यात पर सब्सिडी दी जा रही है ।

यहाँ प्रश्न केवल जैन समाज का नहीं है हिन्दू धर्म में तो गाय को पूज्यनीय माना जाता है । महात्मा गाँधी ने गाय को हिन्दुस्तानियों को पालने वाली कामधेनु कहा था । किन्तु आज जब इतनी अधिक संख्या में गौवध और गौमाँस का निर्यात किया जा रहा है तो समाज के तथाकथित पैरोपकार चुप क्यों है ? इस सवाल से अनेक सवाल जुड़े है कि वास्तव में हम गौवंश को बचाने के लिए कितने सक्रिय है। हममें से कितने लोग है जो गाय और अन्य मूक प्राणियों की चिंता करते है। कितने लोग गौशाला के संरक्षण और संवर्धन के लिये अपनी मुठ्ठी खोलते है, गौशालाओं की व्यवस्थाओं पर ध्यान देते है । पशुपालकों द्वारा छोड़ी गयी, बूढ़ी, बीमार और अशक्त गायों की जिम्मेदारी कौन उठाता है । पहले हमारे परिवारों में परम्परा होती थी कि भोजन बनाते समय गाय के लिये नियम से रोटी बनाई जाती और उसे खिलाई जाती थी । आज हममें से कितने इस नियम का पालन करते हैं। ऐसे अनेक प्रश्न है जिसके उत्तर सकारात्मक नहीं है।

जैन धर्म के अहिंसामयी सिद्धांत का पालन कर हम गौरक्षा कर सकते है बशर्ते हम पूरी निष्ठा से अहिंसक बनें । इसका तात्पर्य यह नहीं कि हम तो गौवध नहीं करते अत: हम अहिंसक है । यदि हम सच्चे अहिंसक है तो हमें गौमाँस और चमड़े आदि की वस्तुओं का भी त्याग करना चहिए । हमारे कितने ही खाद्य पदार्थों और प्रसाधन की सामग्री में घोषित या अघोषित रुप से गौमाँस या चर्बी का प्रयोग किया जा रहा है । हम भी जाने अनजाने इनका सेवन करते चले आ रहे है । यदि हम इनका पूर्णत: त्याग नहीं करते तो हमारा गौवध निषेध और अहिंसक होने की घोषणा करना एक थोथे ढोंग के सिवाय कुछ नहीं है ।

यदि हम वास्तव में गौवध निषेध चाहते हैं तो हमें पहले स्वयं में यह संकल्प लेना होगा कि हम सच्चे अर्थों में अहिंसक बनें और गौमाँस, चर्बी और चमड़े से संबंधित वस्तुओं का त्याग करें। इसके पश्चात ही हम गौवध निषेध कानून का पालन करा सकते है अन्यथा यह हमारा वहम ही होगा जो हम सिर्फ कानून बनाकर गौवध को रोक सकते है । हमें पशुपालन और उनके संरक्षण की व्यवस्थाओं पर पुर्नविचार कर उसे व्यक्तिगत रुचि का विषय बनाना होगा तभी हम सच्चे अर्थों में इस आंदोलन को मूर्तरुप प्रदान कर सकेंगे । – अनुमपा जैन, सहसंपादिका

बदलाव की बयार

हमने हाल ही में महावीर जन्म कल्याणक बड़े उत्साहपूर्ण वातावरण में मनाया । शोभायात्रा कलशाभिषेक बाल महावीर का झूला पालना, भजन कीर्तन इत्यादि समारोहपूर्वक मनाये । सच भी है कि जिन महावीर शासन के शासनकाल में हम रह रहे है उन शासन नायक का ऐसा उत्सव मनाना ही चाहिये । दीपावली भी हम ऐसे ही मनाते है । प्रात:काल निर्वाण लाडू चढ़ाकर भगवान के मोक्षगमन की अनुमोदना करते है और अपने लिये भी ऐसी ही भावना भाते है । यहाँ हम यह भी याद रखें कि ऐसे ही जन्म और मोक्षकल्याणक हमारे चौबीसों तीर्थकरों के होते है । वर्तमान काल में हम जिन चौबीस तीर्थंकरों का अनुगमन कर रहे है उन सभी का जन्म और मोक्ष कल्याणक भी हमें मनाना चाहिये । गोलालारीय दर्शन के जुलाई 2013 के अंक में हमने यह प्रश्न उठाया था कि सिर्फ महावीर जयंती और दीपावली क्यों ? प्रसन्नता की बात है कि लोगों में इस ओर जागरुकता बढ़ रही है। आज अनेक मंदिरों में अन्य तेईस तीर्थंकरों के मोक्षकल्याणक स्वरूप निर्वाण लाडू चढ़ाये जाने की सुखद परम्परा शुरु हो चुकी है । भले ही आज यह आरंभिक दौर में है किन्तु प्रचार प्रसार के फलस्वरुप वह दिन दूर नहीं जब हम वर्ष में चौबीस बार दीपावली मनायेंगे । इन्दौर के अन्य मंदिरों के साथ साथ विजय नगर स्थित श्री दिगम्बर पार्श्वनाथ मंदिरजी में भी हर तीर्थंकर भगवान के मोक्षकल्याणक का निर्वाण लाडू चढ़ाया जाता है जो एक उत्साहवर्धक शुरुआत है और धीरे धीरे अधिकाधिक श्रद्धालु इस पुण्यकार्य से जुड़ रहे है। आप सभी से निवेदन है कि अपने अपने नगर में जिन मंदिरों में एक दिन पूर्व तीर्थकर भगवान के जन्म और मोक्षकल्याणक की सूचना सूचनापटल पर लिखे ताकि अधिक से अधिक लोग पुण्यार्जन कर सके । अभिषेक के समय जिस तीर्थंकर का जन्मकल्याणक हो उनका जन्माभिषेक करें और मोक्षकल्याणक के दिन निर्वाणलाडू चढ़ाय । व्यक्तिगत नहीं तो सामूहिक लाडू चढ़ाने की क्रिया तो की ही जा सकती है । इस पुण्यकार्य में अधिक से अधिक लोगों को जोड़ें । इस हेतु हम सोशल मीडिया, फेसबुक, वाट्सएप्प आदि का भी इस्तेमाल कर सकते है ।

गोलालारीय दर्शन पत्रिका के तत्वावधान में विवाह योग्य प्रत्याशियों की जानकारी हेतु परिचय पुस्तिका प्रकाशित करने की योजना बनाई जा रही है । इस पुस्तिका में दिगम्बर जैन समाज (गोलालारीय, परवार, गोलापूर्व, खंडेलवाल, जैसवाल, खरुआ) के विवाह योग्य प्रत्याशियों की जानकारी स्थानीय प्रतिनिधियों के माध्यम से 1 जुलाई 15 से 31 अक्टूबर 15 तक एकत्रित की जावेगी । पुस्तिका का विमोचन पवाजी मेले में नवम्बर के अंतिम माह में करा जाना प्रस्तावित है । हमारे इस प्रयास में आप अपने नगर/गांव में क्षेत्रीय प्रतिनिधी के रुप में जुड़ सकते है । अधिक जानकारी के लिए संपर्क करे – राजेन्द्र जैन 9406744064, बाहुबली जैन 9425933001 कोमलचंद जैन 9329524227, राजेन्द्र कुमार जैन (सांईनाथ कालोनी) 9425958188

गोलालारीय दर्शन समाज के 4500 परिवारों तक नियमित भेजा जा रहा है । हमारे द्वारा पूर्व में भेजे गये पत्रों पर ही पत्रिका नियमित रुप से भेजी जा रही है ।
संभव है डाक व्यवस्था या आपका पता सही न होने के कारण पत्रिका आपको व आपके रिश्तेदारों तक पत्रिका नहीं पहुंचती है तो उनका नाम व पता पोस्टकार्ड पर लिखकर पत्रिका कार्यालय पर भेज देवें ।
संपर्क करे – 9424013136 पर दोप. 4 से रात्रि 10 तक संपर्क कर सकते है या अपने पता का एसएमएस कर सकते है ।